नैतिकता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

नैतिकता वह मूल्य है जो समाज के द्वारा स्थापित किया जाता है। नैतिक व्यक्ति धार्मिक और उदार होता है। समाज, राज्य, देश और पूरे विश्व पर नैतिकतला लागू होती है। आज के युग में शोषण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अनैतिकता और शोषण का परिणाम हमें ही मिलता है। नैतिक व्यक्ति ईमानदार होता है, उसके जीवन में सर्वत्र, सदाचार और मूल्यों का महत्व रहता है। नैतिकता से कमाया गया धन स्थायी रहता है। जो दूकानदार जीवन में नैतिकता और प्रामाणिकता को महत्व देता है उसकी तरफ ग्राहक भी आकर्षित होते है। ग्राहकों को यह विश्वास होता है कि इस दूकान से लिया गया समान प्रामाणिक है। अनैतिकता से कमाया गया धन नष्ट होने के साथ ही साथ परिवार को भी नष्ट कर देता है। जीवन में तीन चीजें बहुत महत्वपूर्ण है– वृत्ति, प्रवृत्ति और प्रकृति। वृत्ति का अर्थ है हम प्रतिदिन जैसा आचरण करते हैं वह वृत्ति है। जब हम बार–बार वही करते है तो वह हमारी प्रवृत्ति बन जाती है। धीरे–धीरे प्रवृत्ति ही हमारी प्रकृति बन जाती है। कहने का भाव यह है कि विचार के अनुकूल व्यवहार बनता है और व्यवहार से व्यक्तित्व एवं चरित्र बनता है। भारतीय संस्कृति नैतिकता के मूल्यों से संवलित है। हमारी संस्कृति नैतिक आचार विचार व व्यवहार का पालन करने के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है। यहां का प्रत्येक कार्य संस्कार जन्य है। जन्म से लेकर के मृत्यु पर्यन्त संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों की एक श्रृंखला है, जिससे बद्ध होकर के जीवन अध्यात्म एवं नैतिक युक्त हो जाता है। यहां पर सभी जीवों में आत्म–दर्शन का बोध बताया गया है। अणु से लेकर विराट् तक सर्वत्र आत्मा का दर्शन करना चाहिए यह भारतीय संस्कृति का संदेश है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्म स्वातन्त्र्य मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट संपदा है। व्यक्ति अपने आप में एक विचार जगत लेकर चलता है, उसकी प्रवृत्तियाँ निरन्तर विचारों से प्रभावित होती है। परापेक्षा और पर निर्भरता कुछ ऐसी मानसिक कमजोरियाँ हैं, जो प्रायः आम व्यक्ति में पाई जाती हैं। सादगी और नैतिकता का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं। व्यक्ति अपने आप में कैसा भी है वह उसकी वास्तविकता

है। नैतिकता के लोक व्यापी प्रतिमान होते हैं और उन प्रतिमानों की सुरक्षा करना प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो जाता है। नैतिकता के प्रतिमानों की सुरक्षा को हम प्रदर्शन नहीं कह सकते। प्रदर्शन रूप प्रतिमान वे होते हैं जिनमें सभ्यता के भाव मुख्य नहीं होकर प्रदर्शन के भाव तीव्र होते हैं। नैतिकता को स्वीकार करते हुए सहज शुद्ध जीवन जीना ही वास्तविक विचार–दर्शन है, जो व्यक्ति को आत्म शांति प्रदान करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। नैतिक मूल्यों में करूणा, त्याग, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि मूल्यों का समावेश है। जिनका पालन करने से जीवन में शांति प्राप्त होती है। करूणा मानवीय संवेदना का एक ऐसा भाव है जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा भाव भी मानव को अभिभूत कर देता है। उसकी उत्प्रेरणा भी बहुत प्रबल होती है। करुणा भाव किसी राग भाव का अंग नहीं होकर एक स्वतंत्र आत्म भाव है। राग भाव किसी परिचित या चिरपरिचित के साथ ही हो पाता है किन्तु करुणा भाव के लिए कोई शर्त नहीं है। करुणा भाव कहीं भी, यहां तक कि नितांत अपरिचित प्राणी को भी पीड़ा–ग्रस्त देखकर उभर सकता है। वह दुःखी के दुःख को अपने आप में अनुभव करता है। यह संवेदना करुणा भाव से ही जग पाती है। करुणा वस्तुतः एक आत्म भाव है। आर्तग्रस्त प्राणी तो निमित्त मात्र होता है। सरल और सौम्य मानसिकता में करुणा भाव का निश्चित अस्तित्व पाया है। परमार्थ की आराधना में करुणा भाव का सर्वाधिक महत्व है। सच पूछा जाए तो करुणा के बिना परमार्थ हो ही नहीं सकता। आत्म ज्ञान से जो शिक्षा जुड़ी हुई नहीं है वह ज्ञान नहीं, अज्ञान है। अज्ञान का अर्थ नहीं जानना ही नहीं है, नितान्त बाह्य, भौतिक ज्ञान भी अज्ञान स्वरूप ही है। अज्ञान इतना समर्थ तो हो सकता है कि वह आपका पेट भर दे या परिवार का निर्वाह करा दे किन्तु शान्ति जिसे कहते हैं, जीवन का रहस्य ज्ञान जिसे कहते हैं, वह प्रदान करने में आत्मज्ञान ही सार्थक होते हैं। भौतिक ज्ञान अधिकतर रावण और कंस तैयार कर रहा है। नैतिक ज्ञान ही मानव को महामानव महिमा से मण्डित कर सकता है। सत्स्वरूप ज्ञान के अभाव में आत्मा अपने सदसद् प्रवृत्ति का निर्णय नहीं कर पाता। विभाव अर्थात् आत्मा के वे भाव जो आत्म स्वरूप से भिन्न हैं। विभावों से विकृत परिणति बनती है और वही घोर बन्धन का कारण होकर आत्मा के लिए घोर दुःखों का निर्माण करती है। विभाव न हो तो अनन्त

सुख स्वरूपी आत्मा के लिए मोक्ष का द्वार सदा खुला रहे। नैतिक आचरण से आत्म सुख प्राप्त होता है। नैतिक व्यक्ति निडर होता है। उसको किसी से भय नहीं लगता। उसके जीवन में प्रामाणिकता रहती है। जो अनैतिक आचरण करता है धीरे–धीरे उसका पतन होता जाता है। जो दूसरे के लिए कूंआ खोदता है, ईश्वर उसके लिए पहले से ही कूंआ खोदकर उसको गिरा भी देते है। अनैतिक आचरण करने वाला व्यक्ति अपने बूरे कर्मों के परिणामस्वरूप नरकगामी होता है। धोखाधड़ी, माप–तोल में कमी करना, बेईमानी करना आदि कार्य अनैतिक आचरण के कार्य है। जब ईश्वर ने जीविकोपार्जन के नैतिक मार्ग बना रखे हैं तो अनैतिक आचरण करके लोक और परलोक को दूषित नहीं करना चाहिए।